**नवरात्रि**
**17 अक्टूबर 2020 से 24 अक्टूबर तक**

# दुर्गा सप्तशती और नवरात्रि के नौ पाठों का क्रम

भारतीय आस्तिक सम्प्रदाय की सर्वमान्य ग्रन्थावली में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त ''दुर्गा सप्तशती'' का सम्मान वेदों के समान ही चिरकाल से किया जा रहा है। भुवनेश्वरी संहिता में कहा गया है-

यथा वेदो ह्यनादिर्हि तथा सप्तशती मता।

अर्थात् जिस प्रकार से वेद अनादि हैं, उसी प्रकार ''सप्तशती'' भी अनादि ही हैं। तथापित नारायणावतार श्री व्यास जी द्वारा रचित महापुराणों में ''मार्कण्डेयपुराण'' के माध्यम से मानवमात्र के कल्याण के लिये इसका प्रकाशन किया है। सात सौ पद्यों का इसमें समावेश होने से इसे ''सप्तशती'' का नाम दिया गया है। वैसे इसमें सात सतियों की प्रधानता होने से इसे ''सप्तसती'' भी कहते हैं।

निखिल-भुवन नायिक सकल प्रपंच बीज-रूपा पराम्बा महामाया जगदम्बा के महास्तोत्रों में सप्तशती स्तोत्र प्रमुख है। इस स्तोत्र की अधिष्ठात्री जगदम्बा पूर्ण षोडशी महात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या है। इन महाशक्ति के इच्छा, ज्ञान, क्रिया, अथवा रौद्रा, ज्येष्ठा और वामा स्वरूपों का विवेचन ही तीनों चरित्रों में त्रिगुण रूपों में हुआ है। सृष्टि स्थिति और संहार चक्रों के इसी त्रिपुर का प्रतिपादन इस स्तोत्र का अन्तर्निहित लक्ष्य है। इसी त्रिगुणात्मिका के युगल रूपों सहित मूल विद्या को 'सप्तशती' रहस्य गर्भित शब्दों में संकलित किया है। इसी त्रिगुण का त्रिगुणरूप 'नवदुर्गा' है। कहने की आवश्यकता नहीं कि विविध रहस्यमयी परिभाषाओं से युक्त इस महास्तवराज का महात्म्य अनन्त है और इसका भली प्रकार अनुष्ठान करने से भुक्ति-मुक्ति प्राप्त होना अनुभूत विषय है।

'सप्तशती स्तोत्र' वैसे तो मार्कण्डेय पुराण में मिलता है, किन्तु आगम शास्त्रों के सूक्ष्म विचार से पता लगता है कि यह वेदकी भाँति अपौरूषेय ही है और पुराण में इसका संग्रह मात्र प्रकरणवश हो गया है। भुवनेश्वरी तंत्र में लिखा है-

यथा वेदो ह्यनादिर्हि तद्वत् सप्तशती स्मृता।

इसी प्रकार मेरूतंत्र में भी आया है कि सप्तशती स्तोत्र का वेदों की भांति व्यास भगवान् के हृदय में स्फुरण होने से उन्होंने इसका प्रकाश मात्र किया है।

''सप्तसत्या सकलं तत्वं वेद्म्यहमेव हि।
पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति कोट्यंशं हीतरेजनाः ।।''

तात्पर्य है इसके सूत्र इससे पहले भी प्राप्त होते हैं। डामरतन्त्र में इसकी महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा गया है-

''यथाश्वमेधः कृतुषु देवेषु च यथा हरिः।
स्तवेष्वपि सर्वेषु मुख्यः सप्तशती स्तवः।
नातः परतरं स्तात्र किंचिदस्ति वरानने।
भुक्ति मुक्रिप्रदं पुणयं पावनानां च पावनम्।।''

इन सबसे यह भली भांति ज्ञात होता है कि इस स्तोत्र में अन्य स्तोत्रों की अपेक्षा कुछ वैशिष्ट्य है। यही कारण है कि इस नास्तिक्य के युग में भी लाखों लोग इसका पूरा आधा या थोड़ा पाठ स्वयं नित्य करते अथवा कराते हैं। इस स्तोत्र का यों तो प्रतिदिन पाठ हो शुभफल प्रद है, किंतु शारदीय नवरात्री में विशेष रूप से यह फलदायक है। लिखा है-

''शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः।।

भाव यह है कि शारदीय नवरात्रियों में महामाया की महापूजा कर यदि इस स्तोत्र का पाठ किया जाये तो अत्यन्त पुण्य होता है। इस स्तोत्र को अधिकतर लोग 'सप्तशती स्तोत्र' कहते हैं, किन्तु इसका एक असली नाम और भी शास्त्रों में मिलता है जो है 'सप्तशती'। सात सौ श्लोक रूपी मन्त्रों का संग्रह होने से अथवा सात सौ प्रयोगों का इस स्तोत्र में वर्णन होने से 'सप्तशती' नाम भी वैसे तो अन्वर्थ ही है। इन सात सौ प्रयोगों का विवरण इस प्रकार है-

''प्रयोगाणां तु नवति मारणे मोहनेऽत्र तु ।
उच्चाटे स्तम्भने वापि प्रयोगाणां शतद्वयम्।।
मध्यमेऽथ चरित्रे स्यातृतीयेऽथ चरित्र के ।
विद्वेषवश्ययोश्चात्र प्रयोगारिकृते मताः।।
एवं सप्तशत चात्र प्रयोगाः संप्रकीर्तिताः।।
तस्मात्सप्तशतीत्येव प्रोक्तं व्यासेन धीमता।।

अर्थात् कुल मिलाकर इस स्तोत्र में मारण के 90, मोहन के 90, उच्चाटन के दो सौ, स्तंभन के सौ तथा साठ-साठ प्रयोग विद्वेषण और वशीकरण के इस प्रकार सात सौ कुल प्रयोग वर्णित है।

इस स्तोत्र का वास्तविक द्वितीय नाम 'सप्तसती' है। क्योंकि इसमें सात सतियों का या देवीयों का वर्णन है। इन सात सतियों की अथवा देवीयों की उपासना क्रमशः ब्रह्मा, इन्द्र, गुरू, शुक्र, विष्णु, रूद्र, और असुर इन्होंने की थी। ये

सात देवीयां इन सातों की उपास्य देवताएँ थीं- उन सातों का स्तवन ब्रह्मा द्वारा किया गया - उसका ही भगवान् व्यास ने अपने शब्दों में वर्णन किया है। इस समय प्राप्त सप्तशती स्तोत्र 'षटसूत्री सम्वाद' में परिगणित किया जा सकता है। इन सात देवीयों के चरित्रानुसार तीन-तीन रूप भी हैं, और उनकी मूलाधिष्ठात्री 'महालक्ष्मी' है। इस प्रकार त्रिगुण तत्व का एकविंशात्मिका युक्त प्रकृत्यात्मक स्वरूप इस स्तोत्र में वर्णित है। इन सात देवीयों के नाम इस प्रकार हैं-

प्रथम चरित्र में-

1. काली, 2. तारा 3. छिन्न-मस्ता 4. सुमुखी 5. भुवनेश्वरी 6. बाला 7. कुब्जा।

द्वितीय चरित्र में-

1. लक्ष्मी 2. ललिता 3. काली 4. दुर्गा 5. गायत्री 6. अरुन्धती 7. सरस्वती।

तृतीय चरित्र में-

1. ब्राह्मी 2. माहेश्वरी 3. कौमारी 4. वैष्णवी 5. बाराही 6. नारसिंही 7. चामुण्डा या शिवा।

कहीं कहीं ऐंद्रा या इन्द्राणी का भी परिगणन किया गया है, वहां चामुण्डा मूल प्रकृति रूप में वर्णित है। इस प्रकार तीनों चरित्रों में कुल 21 देवीयों के महात्म्य या प्रयोग संग्रहीत किये गये हैं। इन देवीयों में भी जिन सात मूल देवीयों का वर्णन आया है, वे इस प्रकार है- 1. नन्दा 2. शताक्षी 3. शाकम्भरी 4. भीमा 5. रक्रदन्तिका 6.दुर्गा 7. भ्रामरी ये ही तत्वतः इस स्तोत्र की अधिष्ठात्री देवीयाँ है। इनके ही नाम पर इस स्तोत्र को 'सप्तसती स्तोत्र' कहा गया है।

## नवरात्रि के नौ पाठों का क्रम

शाक्त उपासकों के लिये नवरात्रि पर्व का बहुत ही महत्त्व माना गया है। वैसे तो आश्विन मास के शुक्लपक्ष में आने वाले प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिनों को ही ''नवरात्रि'' के रूप में सर्वत्र मनाया जाता है। किन्तु पूरे वर्ष में क्रमश 1. चैत्र, 2.आषाढ़, 3.आश्विन और 4.माघ में चार नवरात्र आते हैं और उनमें देवी उपासना का विधान होता है। उनमें भी अलग-अलग ढ़ंग से तिथियों का निर्णय करके साधना आरम्भ की जाती हैं। अतः उनमें केवल नौ दिन ही होते हें, ऐसा भी नहीं है। प्रायः 10 दिन, 15 दिन और इनसे न्यूनाधिक दिनों में भी ऐसी साधनाएं होती है।

दुर्गासप्तशती पाठ की प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण एक क्रम नौ प्रकार के पाठों का इस प्रकार प्राप्त होता है जो कि रुद्रयामल तंत्र में निर्दिष्ट है-

| दिन | पाठ-नाम | पाठ प्रकार |
|---|---|---|
| 1. | महाविद्या | प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरित्र |
| 2. | महातन्त्री | प्रथम, द्वितीय और तृतीय ,, |
| 3. | चण्डी | प्रथम, द्वितीय और तृतीय ,, |
| 4. | सप्तशती | द्वितीय, प्रथम और तृतीय ,, |
| 5. | मृतसंजीवनी | तृतीय, प्रथम और द्वितीय ,, |
| 6. | महाचण्डी | तृतीय, द्वितीय और प्रथम ,, |
| 7. | रूपदीपिका | ''रूपदेहि.'' इस श्लोकार्ध और नवार्ण मन्त्र से सम्पुटित पाठ |
| 8. | चतुःषष्टि योगिनी | चौंसठ योगिनियों के मंत्रों के योग से पाठ (जिसके आद्यन्त में काली, लक्ष्मी और सरस्वती की योगिनियां रहें।) |
| 9. | परा (चण्डीपाठ) | पराबीज से सम्पुटित पाठ। (दसवें दिन ''उत्कीलन-पाठ'' भी होता है जिसके लिये स्वसम्प्रदाय और गुर्वाज्ञा प्राप्त होने पर अधोदर्शित क्रम से पाठ करें। |
| 10. | उत्कीलन | अध्याय क्रम 13, 1, 2, 12, 3, 11, 4, 10, 5, 8, 6, 7 व 9। |

नवरात्रि के नौ दिनों में क्रमानुसर पाठ किये जायें तो निश्चित ही माँ भगवती भक्त पर प्रसन्न होती है और उसकी समस्त इच्छाओं को पूर्ण होने का वरदान देती है। माँ जगदम्बा यदि प्रसन्न हो जाये तो आप स्वयं सोच सकते हैं क्या किसी भक्त को कोई समस्या रह सकती है, कदापि नहीं। तो फिर इस नवरात्रि में आप भी इन पाठों को क्रमानुसार करें और दूसरों को भी प्रेरित करें।

## एक अतिमहत्वपूर्ण प्रयोग ''सार्धनवचण्डी पाठ''

यह प्रयोग रुद्रयामल तथा वाराहीतंत्र में दर्शित है। इस अनुष्ठान में 11 ब्राह्मणों द्वारा सप्तशती पाठ, एक ब्राह्मण द्वारा सप्तशती का अर्धांश का पाठ तथा एक ब्राह्मण द्वारा षडंग रुद्राष्टाध्यायों का पाठ होता है। इसका फल वहाँ इस प्रकार बतलाया गया है कि-''जो सार्धनवचण्डी'' प्रयोग को सम्पन्न करता है वह प्राणों के अन्त तक भय से मुक्त रहता है। राज्य, श्री, सर्वविध सम्पत्ति एवं सभी कामनाओं को प्राप्त करता है।

**विधि-** यह प्रयोग शुभ मुहूर्त्त अथवा नवरात्रि पर्व के दिनों में किसी दिन 11 ब्राह्मणों द्वारा किया जाता है। सर्वप्रथम कुमारिका पूजन करके उसे भोजन कराये तथा प्रार्थनापूर्वक उससे प्रयोग करने की अनुमति प्राप्त करें। तदनन्तर गृहशान्ति विधान के अनुसार गणपति-स्मरण से भद्रपीठ पूजनान्त प्रयोग करें। भद्रपीठ अष्टदल एवं त्रिकोण से बनाकर उससे भवानीशंकर की सांगोपांग पूजा की जाये। तत्पश्चात् एक ब्राह्मण रुद्राष्टाध्यायी पाठ तथा 9 ब्राह्मण सप्तशती पाठ करें। एक ब्राह्मण अंग पाठ करके बाद में अर्धपाठ करे जिसमें-प्रथमाध्याय से चौथे अध्याय (शक्रादिस्तुति) में ''रक्ष सर्वतः'' तक, पंचमाध्याय में प्रारम्भ से ''भक्तिविनम्रमूर्तिभिः'' तक, फिर एकदशाध्याय में प्रारम्भ से ''वरदा भव'' तक तथा अन्त में 12 और 13वां अध्याय का पूर्ण पाठ करें।

पाठ के पश्चात् उत्तरांग करके अग्निस्थापना करें और पूर्ण आहुति देते हुए हवन करें। इसमें नवग्रह की समिधाओं से गृहयोग, सप्तशती के पूर्ण पाठ मन्त्रों का हवन, श्रीसूक्तहवन तथा शिवमन्त्र 'रुद्रसूक्त' का हवन करें। इसके पश्चात् ब्राह्मण भोजन करायें और कुमारिका और बटुकों को भी भोजन करायें। इस प्रयोग के द्वारा दुःसाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है और असाध्य रोगी भी निरोगी बन जाते हैं। ♦♦♦


टेलिफोनिक कनसल्टेन्सी से जन्म कुण्डली विश्लेषण

गुरुदेव कमल श्रीमाली द्वारा

भाग्य बदला नहीं जा सकता, लेकिन सुधारा व संवारा जा सकता है। क्या आप भी अपने भविष्य से संबंधित योग-दुर्योग, लाभ-हानि के साथ कई सारी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त करना चाहते हैं।

समय एक सा नहीं रहता, ग्रह-नक्षत्र बदलते रहते है, तो दशा भी बदलती है और इसी के साथ आपकी समस्याएँ भी बदलती है। हर किसी की अपनी-अपनी समस्याएँ होती है और उनका व्यवहारिक समाधान खोजना पड़ता है।

क्या आप गुरूदेव पं. कमल श्रीमालीजी से मिलकर अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करना चाहते है, अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहते है।

क्या आप घर बैठे ही श्रीमालीजी से फोन पर परामर्श करना चाहते है... तो अब सुनहरा अवसर है आपके लिये.....

अपना नाम, फोन नं. जोधपुर मुख्यालय में रजिस्टर्ड करवाइये...

सम्पर्क करें:- विश्व तंत्र ज्योतिष

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)-342001
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamalshrimali.com